जंहिंखे परम पारिसु, लगो संग साधूअ जो,
सो केवल कंचन थियो, छड्डे ममता मिसु,
सदा रहे सामी चए, खुलासो खालिसु,
जाणे सारी विसु, चमत्कारु चेतन जो.

सामी जी कहते हैं कि जिस मनुष्य को संतों की संगत रूपी परम पारस मणि का स्पर्श होता है, वह ममता, मोह आदि को त्याग कर खरा सोना (स्वर्ण) बन जाता है। वह सदा बंधन-रहित बन कर सारे विश्व को चेतन (परमेश्वर) का चमत्कार समझने लगता है।

संतजनों की संगत लाभदायक एवं कल्याणकारी मानी गयी है। क्योंकि सत्संग द्वारा मनुष्य सुसंस्कृत हो सकता है। साधु-संतों के संग में रहने से हमारे मन पर सात्विक विचारों का प्रभाव पड़ता है। आत्मज्ञान प्राप्त करने के लिए भी संतों की संगत जरूरी है। जीवन सुधारने के लिए सत्संग एक सरल साधन है। क्योंकि संत कल्पवृक्ष अथवा कामधेनु की भाँति हमारी मनोकामनाएँ पूर्ण करने वाले होते हैं। संतों का सहवास यानी प्रभु का सहवास, सच्चिदानंद का सान्निध्य । संत साक्षात् करुणासागर परमात्मा की तरह होते हैं। संतों का संग प्राप्त होना, भाग्य का लक्षण है। संतों के सहवास से मनुष्य का अज्ञान दूर हो जाता है और अंतर्ज्ञान की प्राप्ति होती है। जैसे चंदन के संग में आ कर नीम का पेड़ भी अपना कड़ुवापन त्याग कर मीठा बन जाता है, उसी प्रकार सत्संग द्वारा बुरा मनुष्य भी अच्छा बन जाता है। संत कबीर के शब्दों में-

संगत कीजे साधु की, कभी न निष्फल होय।
लोहा पारस परस ते, सो भी कंचन होय ।।

सामी साहब का भी यही कहना है कि साधु-संतों की संगत कभी व्यर्थ नहीं जाती। संतों के सहवास/सानिध्य में आने पर दुर्जन भी सज्जन बन जाता है, दुराचारी भी सदाचारी बन जाता है, पापी भी पुण्यवान बन जाता है। संत मानो पारस हैं, जिनके स्पर्श से मनुष्य सुधर जाता है। संत मानो उन हीन-दीन एवं दुष्टों पर भी दया कर उन्हें सन्मार्ग पर लाने का प्रयत्न करते हैं। संत उन्हें अपने जैसा सत्शील, निर्मोही, क्षमावान, परोपकारी और सदाचारी जीव बना डालते हैं। सच ही है कि संतों का संग पारस जैसा होता है।

होय शुद्ध, मिटी कलुषता, सत संगति को पाय।
जैसे पारस को परसि, लोह कनक ह्वै जाय ।।

■